# आभार

` अगस्त्य ` नाटक के रचयेता पं.रामेश्वरदयाल दुबे जी ने मेरे इस अध्ययन कार्य में प्रयाप्त मात्रा में, सभी प्रकार की सहायता की है। कई पुस्तक भेजकर मेरा मार्गदर्शन भी किया है। इस कारण आपके प्रति कृतज्ञता यापन करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ। आपकी सहायता से मैं उऋण नहीं हो सकती। अत: आप के प्रति मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगी।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के लेखन कार्य के लिए श्रध्देय डॉ.व्यं.वि.द्रविड जैसे चिंतनशील गुरूवर्य निर्देशक के रूप में मिले, यह मैं अपना परम-भाग्य मानती हूँ। आपके मौलिक मार्गदर्शन के बिना यह लेखन कार्य का पूरा होना असंभव था। इसलिए आपकी कृतज्ञता का बोझ धारण करने में ही मैं अपना गौरव मानती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग प्रमुख आदरणीय डॉ.व्ही.के मोरे जी के सहायता से ही यह शोध-कार्य पूरा हुआ है। आपके प्रति आभार प्रदर्शित करना मेरा कर्तव्य मानती हूँ। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लेखन में मुझे जिनसे सह्योग मिला उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

इन सब के साथ मुझे इस शोध-कार्य में प्रेरणा देनेवालों में मेरे पति डॉ.जे.बी.कदम तथा मेरे परिवार के लोग, मेरी सहेली श्रीमती एन.बी.पाटील है। इनके प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालयके ग्रंथपाल तथा ग्रंथालय के अन्य लोगोंने मेरी सहायता की है। इस ग्रंथालय के पदाधिकारियोंके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करना मेरा कर्तव्य है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का टंकलेखन अतिशीघ्र तथा तत्परतासे करनेका कार्य श्रीयुत बालकृष्ण रा.सावंत, कोल्हापुर जी ने आत्मीयता से किया है। इसलिए उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

कोल्हापुर।  ( श्रीमती राजनंदा द.राणे )

दिनांक : २९ : १२ : १९९३।